हिन्दी साहित्य के कृष्ण–काव्य में राधा–कृष्ण का प्रेम

डॉ. रजनी
अस्टैंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला–147002
E-mail: rajnipartap@yahoo.co.in

हिन्दी साहित्य के कृष्ण–काव्य में राधा–कृष्ण का प्रेमइस मानव जगत में प्रेम एक ऐसा मार्ग है, दो विभिन्न देहों के अन्तःमन को एक साथ चलाने का, प्रेम एक भाव हो, दो विभिन्न विचारधाराओं के सांमजस्य का, प्रेम का माध्यम है, दो विभिन्न आत्माओं के मिलन का। इसी लिए चिरकाल से प्रेम का अस्तित्व और प्रेम की सत्ता असीम रही है। प्रेम एक ऐसा साधन है जो मानव को बिना किसी स्वार्थ भाव के किसी अन्य के प्रति पूर्णतः समर्पित करने के लिए तत्पर बना देता है। इसी महात्मा बुद्ध ने कहा है कि "प्रेम मुनष्यत्व का नाम है।" बुद्ध के कथन से स्पष्ट होता है कि प्रेम में वह सामर्थ्य है कि वह मानव को मानव होने का भान करवाता है।

इस मानव जगत में प्रेम एक ऐसा मार्ग है, दो विभिन्न देहों के अन्तःमन को एक साथ चलाने का, प्रेम एक भाव हो, दो विभिन्न विचारधाराओं के सांमजस्य का, प्रेम का माध्यम है, दो विभिन्न आत्माओं के मिलन का। इसी लिए चिरकाल से प्रेम का अस्तित्व और प्रेम की सत्ता असीम रही है। प्रेम एक ऐसा साधन है जो मानव को बिना किसी स्वार्थ भाव के किसी अन्य के प्रति पूर्णतः समर्पित करने के लिए तत्पर बना देता है। इसी महात्मा बुद्ध ने कहा है कि "प्रेम मुनष्यत्व का नाम है।"[i] बुद्ध के कथन से स्पष्ट होता है कि प्रेम में वह सामर्थ्य है कि वह मानव को मानव होने का भान करवाता है। प्रेम का सीधा सम्बन्ध मानव के उचित मार्ग दर्शन से भी है। इसी लिए यह प्रेम केवल दो देहधारियों के दैहिक या आत्मिक मिलन का ही साधन नहीं है, बल्कि यह उन दो देहधारियों के आध्यत्मिक और नैतिक जीवन की भी नींव डालता है, क्योंकि प्रेम रूपी बंधन की पहली अपेक्षा विश्वास और दूसरी अपेक्षा समर्पण होती है। परन्तु प्रेम का मार्ग अत्यंत कठिन है। निर्गण संत कवि कबीर ने भी प्रेम–मार्ग को दुरूह बताते हुए कहा है

कबीर यह घर प्रेम का खाला का घर नाहिं
सीस उतारै भुई धरै सो पैठे घर माहिं।।"[ii]

इस लिए प्रेम–भाव में जितना आनन्द है, उतना ही भय भी है। यह भय वास्तविकता में लोक और आत्मा का भय है। पहले तो लोक मर्यादा के साथ प्रेम का निर्वाह करना कठिन हो जाता है। दूसरा यह कि किसी दूसरे के प्रति स्वयं की आत्मा को पूर्णतः समर्पित कर देना भी इतना आसान नहीं होता। परन्तु फिर भी प्रेम की सत्ता को यह भय प्रभावित नहीं कर पाते। इसी लिए प्रेमधारा निरन्तर किसी न किसी रूप में सदैव प्रवाहित होती रहती है।

भारतीय संस्कृति में प्रेम को सब प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों का आधार माना गया है। इसी लिए भारतीय संस्कृति में प्रेम की अवधारणा बहुत व्यापक और बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रागैतिहासिक काल से आज तक मानव जीवन में प्रेम का महत्त्व अक्षुण्ण बना हुआ है। भारतीय संस्कृति में इसी प्रेम के आधार पर कई लोक कहानियां, कई प्रथाएं, कई आलौकिक कथाएं सृजित हुई हैं। भारतीय संस्कृति में प्रेम की अभिव्यंजना कई रूपों में हुई है। साहित्य में तो प्रेम का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह जीवन की प्रेरक शक्ति है। "जीवन की

प्रेरक शक्ति, मानव–अस्तित्व का मूलाधार होने के कारण प्रेम, सहज ही, साहित्य का सबसे सशक्त अंग काव्य से, गठबंधन कर बैठा। काव्य और प्रेम का वही सम्बन्ध है जो हृदय और उसकी धड़कनों का होता है।"[पपप] प्रेम के महत्व के कारण ही भारतीय काव्यशास्त्र में वर्णित नौ रसों में से एक रस श्रृंगार रस है, जिसमें प्रेम की दोनों ही अवस्थाएं सयोग और वियोग का उल्लेख है। साहित्य के अनेकानेक कवियों ने इसी प्रेम के आधार पर कई कालजयी कृतियों का सृजन किया हैं

हिन्दी साहित्य में भी विपुल स्तर पर प्रेमाभिव्यंजना हुई है। हिन्दी साहित्य के आदि से लेकर आधुनिक काल के साहित्य में प्रेम का निरूपण हुआ है। इसी संदर्भ में एक तथ्य यह भी है कि समस्त प्रेम कथाओं में से राधा और कृष्ण के प्रेम पर आधारित जितना साहित्य रचा गया है, उतना अन्य किसी नायक नायिका के प्रेम पर नहीं रचा गया।

कृष्ण चिरकाल से ही एक नायक की भांति साहित्य में व्यापक रूप में चित्रित हुए हैं। "पुराण साहित्य ने भक्ति के क्षेत्र में कृष्णावतार को अधिक व्यापक रूप प्रदान किया। पुराणों में श्रीकृष्ण लीलाओं का सविस्तार और वैविध्यपूर्ण वर्णन है।... प्राकृत–साहित्य में कृष्ण की लीलाओं का श्रृंगारिक वर्णन मिलता है। संस्कृत काव्य शास्त्र में यही मुक्तक साहित्य उदाहरणों के रूप में प्रयुक्त होता रहता है। आगे के भक्ति सम्प्रदायों और उनके साहित्य में कृष्ण के साथ अनेक प्रेम संबंध स्थापित किये गये। धीरे धीरे माधर्य भाव कृष्ण के साथ अधिक से अधिक सम्बद्ध होता गया। कुछ कृष्ण सम्प्रदायों में वात्सल्य और सख्य भी गृहीत हुए, पर अधिकांश ने प्रेमाभक्ति के आलंबन के रूप में ही कृष्ण को ग्रहण किया।"[iv] इसी लिए साहित्य राधा और कृष्ण की प्रेम कथा अमर प्रेम कथा के रूप में चर्चित है।

हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के अन्तर्गत कृष्ण भक्ति शाखा समग्रतः कृष्ण के जीवन पर आधारित है, जिसमें उनके राधा के साथ प्रेम की मार्मिक अभिव्यंजना हुई है। इन दोनों के प्रेम के संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों को साहित्यकारों ने उजागर किया है। हिन्दी साहित्य में सूरदास सहित अष्टछाप कवि नंददास, कृष्णदास, परमानंद दास, कुंभनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविन्दस्वामी, हितहरिवंश, गदाधर भट्ट, रसखान, मीराबाई, स्वामी हरिदास, चैतन्य महाप्रभु आदि सब ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से राधा–कृष्ण के प्रेम को निरूपित किया है।

हिन्दी साहित्य में अधिकतर रचनाकारों ने राधा–कृष्ण के प्रेम की अधिकतर आलौकिक अभिव्यंजना ही की है। यदा–कदा इनके कृतियों में लौकिक प्रेम भी दिखाई देता है, परन्तु वहां भी इन कवियों ने लौकिक प्रेम का चित्रण करते हुए संवेदना के स्तर पर आलौकिक प्रेम को ही अपनी काव्य का मूलाधार बनाया है।

कृष्ण और राधा का प्रेम सामाजिक बन्धनों की सीमाओं में आबद्ध नहीं था। उन दोनों का प्रेम तो समाज में रहते हुए भी समाज से परे था, परन्तु मर्यादित था। कृष्ण बाल्यवस्था से ही रसिक के रूप में पूरे ब्रज में चर्चित हो गए। गोपियां उनके प्रेम–पाश में बंधकर लोक लाज सब भूल गई। इसी प्रकार राधा भी कृष्ण के प्रेम में आसक्त थी। हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ रचनाकार सूरदास ने इनके प्रेम के पहले मिलन तक का दृश्य भी बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। बाल रूप कृष्ण जब खेलने के लिए ब्रज की गलियों में निकलते हैं तो अकस्मात् ही राधा को देखते हैं। प्रथम दृष्टि में ही राधा के रूप–सौंदर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। सूरदास ने इस प्रसंग का वर्णन सूरसागर में अत्यंत आकर्षक रूप में किया है–

"खेलत हरि निकसे ब्रज–खोरी

कटि कछनी पीताम्बर बांधे, हाथ लिये भौंरा, चक, डोरी

औचक ही देखी तहं राधा, नैन बिसाल, भाल लिये रोरी

नील वसन करिया कटि पहिरे, बेनी पीठि रुलति झकझोरी

संग लरिकिनी चलि इत आयति, दिन थोरी, अति छवि तन–गोरी।

सूर स्याम देखत हीं रीझैं नैन–नैन मिलि परी ठगोरी।"[v]

कृष्ण राधा के सौंदर्य को देखकर ठगे से रह जाते हैं। वह इस असीम सुन्दरी का परिचय पाना चाहते हैं। इसी लिए राधा से प्रश्न करते हैं :–

"बूझत स्याम कौन तू गौरी

कहाँ रहति, का की है बेटी, देखी नहीं कबहुं ब्रज–खोरी।।"[vi]

किन्तु राधा कृष्ण की इस चतुराई को जान जाती हैं और प्रत्युत्तर में अधिक चतुराई से कहती हैंः–

"काहे कौं हम ब्रज–तन आवतिं खेलति रहति आपनी पौरी

सुनत रहतिं स्रवननि नन्द–छोटा करत फिरत माखन–दधि–चोरी।।"[vii]

राधा के सौन्दर्य के साथ–साथ उनकी इस चतुराई से बाल रूप कृष्ण और भी अधिक प्रभावित हो जाते हैं और राधा से आपसी मेल–जोल बढ़ाने को आतुर हो जाते हैं और अपनी अबोध राधा को अपनी बातों में उलझाते हुए कहते हैंः–

"तुम्हरौ कहा चोरि हम लेहैं, खेलन चलो संग मिलि जोरी।

सूरदास प्रभु रसिक–सिरोमनि, बातनि भुराई राधिका भोरी।।"[viii]

इस प्रकार इस आपसी व्यंग्य–वार्तालाप से ही दोनों में परस्पर जुडाव पैदा होने लगता है और धीरे–धीरे बाल–खेल कब प्रेम–खेल में परिणत हो जाता है, इसका आभास दोनों को ही नहीं हो पाता। दोनों परस्पर आसक्त हो जाते हैं और दोनों की परस्पर आसक्ति इतना गहरा जाती है कि उनके प्रेम की चर्चा पूरे ब्रज में हो जाती है। कृष्ण और राधा मिलने के बहाने ढूंढने लगते हैं। उनके मिलन राधा की कई सखियां और गापिकाएं उनकी सहायता करती हैं। यह उनके प्रेम की प्रकाष्ठा ही है कि जब कृष्ण बांसुरी बजाते थे, तो उसमें भी राधा के नाम का ही नाद ध्वनित होता था। राधा–कृष्ण का यह प्रेम–भाव को विश्व–प्रसिद्ध कवि और श्रीकृष्ण भक्त सूरदास के 'सूरसागर' में भी दिखाई पड़ता है। गोपियां भी राधा–कृष्ण के प्रेम से अवगत हैं। इसी लिए वह कहती हैं –

"सुनति नहीं वह कहति कहा है, राधा राधा नाम।"[ix]

भाव कि वह वंशी बस राधा राधा ही पुकार रही है। राधा पर भी मुरली का जादू सवार हो गया है। कवि रसखान राधा पर मुरली के प्रभाव को इस प्रकार व्यक्त करते हैं :–

"बंसी बजावत आनि कढ़ौ सो गली मैं अली कछु टोना सौ डारौ।

हेरि, चितै तिरछी करि दृष्टि चलौ गयौ मोहन मूठि सी मारै।।

ताही घरी सों परी धरी सेज पै प्यारी न बोलति प्रान हूँ वारै।

राधिका जीहै तो जीहै सबै न तो पीहै हलाहल नंद के द्वारे।।"[x]

पहले पहल तो राधा कृष्ण की मूरली से बहुत प्रभावित होती है। परन्तु जब कृष्ण दिन–रात मुरली में ही मग्न हो जाते हैं, तो अबोध राधा उसी मुरली से वैर–भाव रखती है। उनको लगता है कि कृष्ण उनसे अधिक अपनी मुरली से अधिक प्रेम करते हैं। वह कृष्ण की मुरली से इतनी अधिक ईर्ष्या करती है कि वह कृष्ण की प्रत्येक वस्तु को धारण करने के लिए तत्पर है, परन्तु मुरली को नहीं। हिन्दी साहित्य के कवि रसखान ने राधा के इस मनोभाव को सूक्ष्मता से पकड़ा है। वह राधा के इस स्वाभाविक ईर्ष्या की अभिव्यक्ति इस प्रकार करते हैंः–

"मोर–पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरैं पहिरौंगी।

ओढ़ि पीताम्बर, लै लकुटी बन, गोधनि ग्वारिन संग फिरौंगी

भावतो वाहि मेरो '' रसखानि, सो तेरे कहे सय स्वांग भरौंगीं।

या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।"[xi]

राधा का कृष्ण की मुरली के प्रति यह ईर्ष्या भाव स्वाभाविक तो है, परन्तु राधा इस बात से अन्जान है कि राधा ही कृष्ण को अति प्रिय हैं। सूरदास ने एक अन्य पद में यही भावोल्लेख एक गोपी के माध्यम से करवाया है जब वह राधा को समझाती हुई कहती हैं –

"जब जब मुरली कान्ह बजावत।

तब–तब राधा नाम उचारत, बारंबार रिझावत।

तुम रमनी, वह रमन तुम्हारे, वैसेहिं मोहिं जनावत।

मुरली भई सौति जो भाई, तेरी टहल करावत।

वह दासी तुम हरि–अर्धांगिनी, यह मैरें मन आवत।

सूर प्रगट ताही सौं कहि–कहि, तुमकौं स्याम बुलावत।।"[xii]

राधा को कृष्ण से अपरिमित प्रेम है, किन्तु प्रेम की स्वाभाविक वृत्ति, ईर्ष्या, उनके भी हृदय में भी सामान्य स्त्रियों की ही भांति है। वह भी सामान्य स्त्रियों की ही भांति कृष्ण के समक्ष रोष–मान आदि प्रकट करती हैं। सूरदास ने कृष्ण के जीवन–वृत्त के इस प्रेममयी पक्ष के बहुत सूक्ष्म चित्र सूरसागर के माध्यम से प्रस्तुत किए हैं। सूरसागर की राधा कभी आलौकिक रास–लीला में समस्त समाज को भूलकर प्रेम–रस का पान करती दिखाईं देती हैं, तो एक सामान्य लौकिक नायिका की भांति कृष्ण से रूष्ठ हो जाती हैं। 'सूरसागर' में चार मान–लीलाओं का वर्णन हैं। इन मान–लीलाओं में माधव और राधा के आपस में रूठने मनाने का सुन्दर वर्णन किया गया है। इस धरातल पर दोनों लौकिक नायक नायिका प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार हिंडोला वर्णन फाग–लीला और में कुष्ण–राधा के मानवीय रूप का आभास होता है। कृष्ण का राधा को झूला झूलाना नितांत लौकिक प्रतीत होता है। इस समय कृष्ण और राधा का सौन्दर्य देखते ही बनते हैः–

"झूलत स्याम स्यामा संग।

निरखि दंपति अंग सोभा, लजत कोटि अनंग

मंद त्रिविध समीर सीतल, अंग अंग सुगंध।..."[xiii]

राधा–कृष्ण का यह प्रेम दृश्य सबके लिए आनंददायी है। सभी इस दृश्य को देखकर असीम आनन्द का अनुभव करते हैं। इसी प्रकार फाग–लीला में राधा और कृष्ण का प्रेम गुलालमयी हो जाता है। दोनों एक–दूसरे को अपने प्रेम में रंग लेते हैं। सूरदास इस दृश्य को इस प्रकार चित्रांकित करते हैंः–

"खेलत नवलकिसोर किसोर।

नंद–नंदन बृषभानु–सुता चित, लेत परस्पर चोरी।"[xiv]

जब सब उनको इस अवस्था में देखने लग जाते हैं तो राधा सकुचा जाती हैं। वह कृष्ण से गुलाल न फैंकने की अरज करती है। राधा के मान–मनुहार का कृष्ण पर कोई असर नहीं होता। कृष्ण बरबस राधा को गुलाल लगाते हैं। राधा अपनी सखियों के सामने अपनी अबोधता प्रकट करते हुए कहती है :–

"मैं जु गई हुती बैरन बाहर मेरी करी गति टूटि गौ माला।

होरी भई कै हरी भए लाल कै लाल गुपाल पगी ब्रजबाला।।"[xv]

इस प्रकार राधा और कृष्ण का प्रेम पराकाष्ठा पर पहुंचकर सब मान–मर्यादा का त्याग कर देता है। वह दोनो इतने प्रेममयी हो जाते हैं कि कृष्ण राधा बन जाते हैं और राधा कृष्ण। सूरसागर में इस प्रसंग का चित्रण है जब राधा कृष्ण का वेश धारण कर लेती हैं और कृष्ण राधा के वस्त्राभूषण आदि पहन लेते हैं। यह वेश धारण केवल बाहरी वेश धारण नहीं है, अपितु यह दोनों के परस्पर प्रेम की गूढ़ता है कि दोनों पर एक दूसरे की आत्मा का आरोप हो गया है। उनका प्रेम जब पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है, तब दोनों को प्रेम का वह रूप भी देखने को मिलता है, जिसे सब विद्वानों में प्रेम का गहनतम रूप माना है, वह है वियोग। कंस दमन के लिए कृष्ण राधा को छोड़कर मथुरा चले जाते है। राधा को विरह–अवस्था का शाप लग जाता है। वह दिन–रात विरह अग्नि से विचलित है। सूरदास ने राधा और कृष्ण के इस प्रेम का भी बखूबी वर्णन किया है। 'भ्रमर–गीत' वास्तव में उनका विरह–काव्य ही है। इसमें कृष्ण के चले जाने के बाद गापियों और राधा की क्या दशा है, उस स्थिति का वर्णन है। प्रेम के इस पक्ष के प्रति भी हिन्दी साहित्य के रचनाकार सजग रहे हैं। रसखान और सूरदास के अतिरिक्त मीराबाई ने भी विरह के रूप को चित्रित किया है। इन कवियों ने विरह की वेदना के मर्म को पकड़ा है। यही से कृष्ण और राधा के प्रेम की आध्यात्मिक व्याख्या प्रारम्भ होती है। रसिक कृष्ण यहां परमात्मा का रूप धारण कर लेते हैं और प्रियतमा राधा विरह की आग में तड़पती परमात्मा के मिलन को आतुर आत्मा बन जाती है। राधा और कृष्ण के प्रेम के संयोग पक्ष में जहां लौकिकता का आभास होता है, वहीं विरह में यह प्रेम आलौकिक प्रतीत होने लगता है। सूरदास के 'भ्रमरगीत' में वर्णित विरह केवल दैहिक विरह नहीं प्रतीत होता, अपितु वह आत्मिक विरह जान पड़ता है, जिसकी आध्यात्मिक स्तर पर ही व्याख्या होती है।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य में कृष्ण के प्रेम के दोनों रूप मिलते हैं– संयोग और वियोग। हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल में कृष्णभक्ति धारा के महान् रचनाकारों यथा सूरदास, रसखान और मीराबाई ने कृष्ण के स्वरूप को लौकिक और अलौकिक दोनों धरातलों पर प्रस्तुत किया है। मीरा के काव्य में जहां कृष्ण और उनके स्वयं के प्रेम के वियोग पक्ष का बाहुल्य है वहीं सूरदास और रसखान के काव्य में उनके प्रेम के संयोग का जितना सटीक और प्रभावशाली वर्णन हुआ है, उतना ही वियोग पक्ष का भी। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य की लम्बी अवधि में लिखा गया साहित्य वास्तव में राधा और कृष्ण के प्रेम पर ही आधृत है। इस लिए हिन्दी साहित्य इन महान रचनाकारों के साथ–साथ राधा और कृष्ण के प्रेम के प्रति भी आभारी है।

---

[i] उद्धृत रामकुमार खाण्डेलवाल, हिन्दी काव्य में प्रेम–भावना, मथुरा : जवाहर पुस्कालय, पृ.–18
[ii] श्यामसुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली, काशी : नागरी प्रचारिण सभा, पृ.–69
[iii] रामकुमार खाण्डेलवाल, हिन्दी काव्य में प्रेम–भावना, मथुरा : जवाहर पुस्कालय, पृ.–21
[iv] रामकुमार खाण्डेलवाल, हिन्दी काव्य में प्रेम–भावना, मथुरा : जवाहर पुस्कालय, पृ.–100
[v] वियोगीहरि (संपा.), सूर सागर, पद संख्या– 1290
[vi] वही, पद संख्या, 1291
[vii] वही, पद संख्या, 1291
[viii] वही, पद संख्या, 1291
[ix] नगेन्द्र (प्र. संपा.), सूर–पंचशतक, दिल्ली : सूर्य प्रकाशन, पृ.–221
[x] किशोरी लाल गोस्वामी (संपा.), सुजान रसखान, छंद संख्या – 129
[xi] वियोगी हरि (संपा.), ब्रजमाधुरी सार, संस्करण सं0 2013, पृ.–150
[xii] वियोगी हरि (संपा.), ब्रजमाधुरी सार, संस्करण सं0 2013, पृ.–150
[xiii] नगेन्द्र (प्र. संपा.), सूर–पंचशतक, दिल्ली : सूर्य प्रकाशन, पृ.–187
[xiv] नगेन्द्र (प्र. संपा.), सूर–पंचशतक, दिल्ली : सूर्य प्रकाशन, पृ.–289
[xv] किशोरी लाल गोस्वामी (संपा.), सुजान रसखान, छंद संख्या – 195